क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान (भोपाल) में संचालित प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) के वर्तमान परिद्रश पर एक अध्ययन

बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की

मास्टर ऑफ़ एजुकेशन (आर.आई.ई.)

उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु

लघु शोध -प्रबंध

सत्र - २०१६-२०१८

मार्गदर्शक

डॉ. बी.रमेश बाबू

प्राध्यापक,शिक्षा विभाग,

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल

शोधार्थी

मृदुला शर्मा

एम्.एड.(आर. आई.ई.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल

D-695

एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

(राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली)

श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHOPAL
PRE-PRIMARY EDUCATION CENTRE

घोषणा पत्र

मैं श्रीमती मृदुला शर्मा ऍम.एड.की छात्रा हूँ | जो कि "क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान में संचालित प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) कार्यक्रम के वर्तमान परिदृश्य पर एक अध्ययन" विषय पर लघुशोध प्रबंध २०१६-२०१८ में प्रो. रमेश बाबू,क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान भोपाल के मार्गदर्शन में किया गया है |

यह लघुशोध प्रबंध मेरे द्वारा बरकतुल्ला विश्वविद्याल,भोपाल की ऍम.एड. की परीक्षा २०१६-२०१८ की उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है |

इस शोध के लिए दिए गये आंकड़े एवं सूचनाएँ विश्वसनीय स्त्रोतों तथा मूल स्थानों से प्राप्त किये गये हैं तथा ये प्रयास पूर्णता मौलिक एवं सत्य हैं |

स्थान : भोपाल

दिनांक : 21-05-18

शोधार्थी

मृदुला शर्मा

(ऍम. एड. छात्रा)

क्षेत्रिय शिक्षा

संस्थान -भोपाल

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है की मृदुला शर्मा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल में ऍम.एड. (प्रारम्भिक बाल शिक्षा) की नियमित छात्रा हैं | इन्होंने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत लघु शोध "प्रारंभिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) कार्यक्रम वर्तमान परिद्रश्य पर एक अध्ययन" मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है |

यह शोध निष्ठापूर्वक किया गया प्रयास है जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नही किया गया. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की ऍम.एड.(प्रारंभिक शिक्षा) परीक्षा सत्र २०१६-१८ की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किये जाने योग्य है |

स्थान - भोपाल

दिनांक - 21-05-18

मार्गदर्शक

21.5.18

डॉ. बी. रमेश बाबू.

शिक्षा विभाग

निर्गुण निराकार

सर्वव्यापी सर्जनहार

परमपिता परमात्मा

के पावन चरणो

में समर्पित ।

आभार ज्ञापन

स्रजन के आत्मीय अनुबंध और स्वजनों के मधुर सम्बन्ध से रचे इस प्रयास हेतु मैं उन सभी मर्मज्ञ तथा विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके ज्ञान, अनुभव और सतत मार्गदर्शन से इस रचना को आकार मिला है।

सर्वप्रथम मैं अपने मार्गदर्शक डॉ. बी. रमेश बाबू, विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग की ह्रदय से आभारी हूँ कि उन्होंने अपने संरक्षण में मुझे कार्य करने का अमूल्य अवसर प्रदान किया। इनके विशुद्ध विषय ज्ञान, विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं वात्सल्यपूर्ण सहयोग का परिणाम ही यह लघुशोध प्रबंध है। आपने मुझे स्वयं के बहुमूल्य समय में से एक अध्यापक, अभिभावक तथा निर्देशक के रूप में पर्याप्त समय दिया है अतएव मैं आपकी ऋणी रहूंगी।

मैं क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान के परम आदरणीय प्राचार्य डॉ. नित्यानंद प्रधान, अधिष्ठाता डॉ.आई.बी.चुगतई, डॉ.रतनमाला आर्य, डॉ. एन. सी. ओझा, डॉ संजय पांडागले, डॉ.सौरभ मिश्रा शिक्षा विभाग क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने योग्य मार्गदर्शन तथा अनुकूल वातावरण एवं सुविधाएँ देकर कार्य को सुगम बनाया।

मैं ग्रंथालय प्रभारी श्री पी. के. त्रिपाठी तथा संस्था के अन्य सभी कर्मचारियों को धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

मैं कृतज्ञ हूँ मेरे दादा - दादी की जिनकी दुआओं के कारण ही आज मैं इस स्थान तक पहुंची हूँ। मैं अपने वन्दनीय माता - पिता की सदैव ऋणी रहूंगी। जिन्होंने मेरे अध्ययन में तन, मन, धन से अपना आत्मीय सहयोग, आर्शीवाद व शुभकामनायें प्रदान की मैं अपने भाइयो एवं परिवार के स्नेहिल सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने कदम-कदम पर मेरा हौसला बढ़ा के मुझे प्रेरित किया।

मैं समस्त विद्यालय (प्रदत्त संग्रहण) के प्राचार्य, शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों का उनके प्रतक्ष्य व परोक्ष सहयोग के लिए धन्यवाद करती हूँ।

मैं अपनी सभी सहपाठियों की विशेष आभारी हूँ जिन्होंने शोधकार्य पूर्ण करने में मुझे प्रोत्साहन तथा सहयोग दिया।

अंत में मैं अपने मार्गदर्शक के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करती हूँ -

अज्ञानरुपी अन्धकार में

ज्ञानरुपी ज्योति जलाने वाले,

कदम-कदम पर पगडण्डी बनकर

मार्ग मुझे दिखाने वाले,

हर-पल प्रेरणा स्त्रोत

प्यार से बहाने वाले,

हे गुरुवर!

आभार आपका किन शब्दों में मैं बयाँ करूँ,

आपके चरणों में नतमस्तक हो के शत - शत

प्रणाम करूँ..

स्थान - क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान, भोपाल

दिनांक : 21-05-18

शोधकर्ता

Mradula

मृदुला शर्मा

एम.एड.

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान,

एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल

अनुक्रमणिका

विवरण

घोषणा-पत्र

प्रमाण-पत्र

आभार-ज्ञापन

विषयवस्तु

अध्याय १ 16

1.1 प्रस्तावना 16

1.2 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम पर एक द्रष्टि 17

1.3 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता -: 18

1.4 प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम का महत्व -: 21

- शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह माना गया है कि ३-६ वर्ष की आयु मानव विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है | जो बहुत ही सवेदनशील तथा निर्णयक होती है यह वह अवस्था है जब जीवनभर के विकास आधार,मूल्य और समस्त संभावनाओ के द्वार खुलते हैं |इसी समय में बौद्धिक शक्ति के विकास की संभावना सर्वाधिक होती है अतः इस अवस्था में प्रारम्भिक बाल शिक्षा द्वारा बच्चों के विकास को सही दिशा तथा गति प्रदान की जा सकती है |21

- प्रारम्भिक बाक शिक्षा द्वारा बच्चों को उनके सर्वांगीर्ण विकास के लिए पर्याप्त अवसर तथा अनुभव दिए जा सकते हैं |21

- बच्चों की स्वास्थ्य - पोषण की जरूरतें मनोवैज्ञानिक, सामजिक और शैक्षणिक विकास अभिन्न रूप से जुड़े हुए पक्ष हैं | प्रारम्भिक बाल शिक्षा द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों के विकास के विभिन्न क्षेत्रो में प्रत्येक स्तर पर बच्चों के लक्षणों और अनुभव के अर्थ में उनकी अधिगम की आवश्यकताओ को ध्यान में रख कर उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है |21

- इस शिक्षा के माध्यम से बच्चों की असमर्थताओं को शीघ्र पहचाना जा सकता है तथा उचित अभिप्रेरण द्वारा बच्चों की कमी को दूर करके उसके अहित को रोकने में मदद मिलती है | 21

- यह एक स्वीकार्य तथ्य है कि बच्चों में सीखने और अपने आसपास की दुनिया को

समझने की स्वभाभिक इच्छा होती हैं | इसीलिए शुरूआती वर्षो में बच्चों की रूचि तथा प्राथमिकताओ के अनुसार अधिगम सरलता से कराया जा सकता है | 21

- औपचारिक विद्यालय में प्रवेश करने से पहले पूर्व विद्यालयी अवस्था में प्रारम्भिक बाल शिक्षा का अनुभव बच्चों में विद्यालय के प्रति भय को दूर करने तथा सकारात्मक प्रत्यय निर्माण करने में सहायक होती है| 21
- प्रारम्भिक बाल शिक्षा, घर के अधिक सुरक्षित, सीमित वातावरण और विद्यालय के औपचारिक वातावरण के मध्य सेतु की तरह कार्य करती है | यह बच्चों को विद्यालय के वातावरण के लिए तैयार करती है | तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए सक्रिय बनाती है | 22
- यह कार्यक्रम उन बच्चों को मजबूत शैक्षिक आधार प्रदान करने में सहायक हैं | जिनकी क्षमता के विकास में उनके माता - पिता का अशिक्षित होना तथा सुविधाओं की कमी बाधक होती है | 22

1.5 प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य एवं लक्ष्य -: 22

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम राष्ट्रिय. स्तर का बहुत बड़ा बाल्केंद्रित कार्यक्रम है | यह खेल पद्धति तथा क्रियाओं पर आधारित है | इसका लक्ष्य सभी बच्चों को प्रेम सौहाद्रपूर्ण वातावरण में खेल तथा आनंद के साथ सीखने का अवसर प्रदान करना है | 22

1.6 पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का वर्तमान परिदृश्य -: 24

1.7 समस्या कथन -: 25

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा :- 25

1.8 अध्ययन के उद्देश्य :- 26

1.9 परिकल्पना :- 26

1.10 अध्ययन का परिसीमन :- 26

1.11 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व -: 27

2 अध्याय -२ 29

2.1 सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन 29

3 अध्याय -३ 38

3.1 शोध विधि एवं प्रक्रिया 38

3.2 अध्ययन विधि :- 38

3.3 अध्ययन की समष्टि :- 38

3.4 उपकरण तथा प्रविधि :- 38

अवलोकन अनुसूची :- 38

प्रश्नावली (प्रशासकों के लिए) :- 39

प्रश्नावली शिक्षकों के लिए :- 39

3.5 उपकरणों का प्रशासन :- 40

3.6 प्रदत्त संकलन :- 40

3.7 प्रद्त्तो का अंकन तथा सारणीयन :- 40

3.8 प्रद्त्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या :- 41

4 अध्याय - ४ 43

4.1 प्रद्त्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा व्याख्या 43

अवलोकन अनुसूची 43

4.1.1 बच्चो के श्रवण कौशल के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण :- 43

4.1.2 विभिन्न आवाजों को पहचानने व अंतर बताने के लिए उपयोग किये जाने वाले उपकरण का विवरण- 44

4.1.3 बोलने की क्षमता के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 44

4.1.4 पढ़ने की आदत विकसित करवाने के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 45

4.1.5 लिखने की आदत व नेत्र समन्वय के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण - 45

4.1.6 बच्चों में समझने पहचानने आदि की क्षमता के विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण - 46

4.1.7 पर्यावरण अवधारणाओ के विकास हेतु विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का विवरण- 46

4.1.8 सोचने की क्षमता के विकास के लिए होने वाली गतिविधियों का विवरण - 46

4.1.9 बच्चों के सर्जनात्मक तथा कलात्मक विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण- 47

4.1.10 आत्माभिव्यक्ति के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 47

4.1.11 बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विद्यालय में कराई जाने वाली क्रियाओं का

अवलोकन अनुसूची :- 38

प्रश्नावली (प्रशासकों के लिए) :- 39

प्रश्नावली शिक्षकों के लिए :- 39

3.5 उपकरणों का प्रशासन :- 40

3.6 प्रदत्त संकलन :- 40

3.7 प्रद्त्तो का अंकन तथा सारणीयन :- 40

3.8 प्रद्त्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या :- 41

4 अध्याय - ४ 43

4.1 प्रद्त्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा व्याख्या 43

अवलोकन अनुसूची 43

4.1.1 बच्चो के श्रवण कौशल के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण :- 43

4.1.2 विभिन्न आवाजों को पहचानने व अंतर बताने के लिए उपयोग किये जाने वाले उपकरण का विवरण- 44

4.1.3 बोलने की क्षमता के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 44

4.1.4 पढ़ने की आदत विकसित करवाने के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 45

4.1.5 लिखने की आदत व नेत्र समन्वय के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण - 45

4.1.6 बच्चों में समझने पहचानने आदि की क्षमता के विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण - 46

4.1.7 पर्यावरण अवधारणाओ के विकास हेतु विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का विवरण- 46

4.1.8 सोचने की क्षमता के विकास के लिए होने वाली गतिविधियों का विवरण - 46

4.1.9 बच्चों के सर्जनात्मक तथा कलात्मक विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण- 47

4.1.10 आत्माभिव्यक्ति के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण- 47

4.1.11 बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विद्यालय में कराई जाने वाली क्रियाओं का

विवरण- 47

4.1.12 बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए विद्यालय में कराई जाने वाली गतिविधियों का विवरण-48

4.1.13 बच्चों की स्वास्थ्य तथा पोषण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का विवरण- 48

4.1.14 बच्चों में सामाजिक तथा भावनात्मक विकास के लिए विद्यालय द्वारा कराई जाने वाली गतिविधियों का विवरण- 49

4.2 प्रश्नावली (शिक्षको के लिए) 50

4.2.1 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के सभी शिक्षको को प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम तथा इसके उद्देश्यों के बारे में पूर्ण जानकारी है |प्रतिक्रिया के तौर पर उन्होंने बताया- यह कार्यक्रम ६ वर्ष के बच्चो के सर्वांगीर्ण विकास हेतु एक सुनियोजित विकास कार्यक्रम है | तथा सभी शिक्षक इसके उद्देश्य पूर्ति के लिए सजग दिखे | 50

4.2.2 बच्चो के विकास में प्रारम्भिक शिक्षा की भूमिका पर सभी शिक्षको ने यह माना कि यह शिक्षा बच्चों के विकास में सकारात्मक सहयोग देती है | विद्यालय के शिक्षक यह मानने में असमर्थ रहे कि यह शिक्षा बाल विकास में किस तरह सहायक है विद्यालय के शिक्षको ने कहा कि यह बच्चों के सर्वांगीर्ण विकास में सहयोग देती है तथा आगे विद्यालय के लिए बच्चों में समायोजन छमता का विकास करती है | 50

4.2.3 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको ने अभिभावकों को बच्चों के स्वास्थ्य व उचित पोषण व शिष्टाचार हेतु सलाह देने की बात कही |विद्यालय में शिक्षकों ने बच्चो अध्ययन व गृहकार्य में अभिभावक को ध्यान देने व सहयोग करने की सलाह दी | विद्यालय में शिक्षको ने अभिभावकों को बच्चो को समझने व उन्हें समय देने की सलाह दी | 51

4.2.4 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक विद्यालय द्वारा प्राप्त उपकरणों व सामग्री से पूरी तरह संतुष्ट नही थे | शिक्षकों का कहना था कि सामग्री व उपकरणों की मात्रा संतुष्टिजनक नही है | उनका कहना था कि कुछ नई तकनिकी के उपकरणों की यहाँ कमी है | 51

4.2.5 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने पूर्ण विश्वास से बताया की प्रत्येक बच्चा स्कूल में कराई जाने वाली क्रियाओं भाग लेता है तथा उसे इन क्रियाओं को करने में मजा भी आता है | 51

4.2.6 पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चो के विकास के लिए होने वाली क्रियाओं के बारे में शिक्षको की प्रतिक्रिया निम्नलिखित है- 52

4.2.7 पी.टी., ड्रिल, सामान्य व्यायाम, खेल-कुंद जैसे दौड़ना, फिसलना, गेंद उछालना, झूले झुलना, चित्र बनाना, साइकिल चलाना, ब्लाक बनाना,क्ले मोडलिंग,न्रत्य,योग, आदि

क्रियाएं कराई जाती हैं | 52

4.2.8 कहानी सुनाना, पिक्चर कार्ड दिखा के प्रश्न पूंछना, शिक्षक किसी भी विषय पर बच्चो के साथ विचार-विमर्श करते हैं, इस प्रकार इन क्रियाओं द्वारा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चो के शब्द कोष और भाषा ज्ञान को बढाया जाता है | 52

4.2.9 बच्चों में सोचने की क्षमता के विकास हेतु कहानी, चित्र-पुस्तक, पहेलिय, ब्लाक बनाना, तथा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे-सी.डी., विभिन्न आकृति, विभिन्न रंगों के आकार आदि का उपयोग किया गया | इसके अतिरिक्त शिक्षक द्वारा व्याख्या भी की जाती है | 52

4.2.10 बच्चों में नवीन व मौलिक सोच विकसित करने के लिए तथा उनकी सर्जनशीलता के विकास के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक चित्र बनाना, रंग भरना, कागज मोड़ना, कागज चिपकाना, थम्ब प्रिंटिंग, रद्दी सामान से नयी वास्तु बनाना, क्ले मोडलिंग आदि क्रियाएं करते हैं | 52

4.2.11 बच्चो में सहभागिता, सहयोग समन्वय, सामाजिक तथा भावनात्मक के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के वर्तमान परिद्रश्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है यहाँ बच्चों को कहानी, ब्रत्य, नाटक, सामूहिक खेल, सामाजिक शिष्टाचार की आदतों का प्रशिक्षण, टिफिन शेयर करना, विभिन्न दिवस व उत्सव मना के बच्चो में स्वस्थ्य सामाजिक जीवन की नींव डाली जाती है | 53

4.2.12 बच्चो का मन विद्यालय में लगा रहे और वे प्रसन्न व आनंदित रहे इस पर पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको ने कहा कि इसके लिए विद्यालय में विभिन्न क्रियाए जैसे- खाली समय में अपनी पसंद के खेल खेलना, बाहर जा कर खेलना, आई.सी.टी. का उपयोग करके सीखना,कहानी सुनाना आदि.उनका जन्मदिवस व उत्सव मनाये जाते हैं तथा पुरूस्कार व उपहार दिए जाते हैं |53

4.2.13 विद्यालय में दैनिक क्रियाओं की योजनाओं की पूछी जाने पर पूर्व प्रायमिक विद्यालय के शिक्षको ने बताया कि वे दैनिक क्रियाओं को पाठ्यक्रम के आधार पर योजनाबद्ध करते हैं | जिसमे वे क्रियाएं शामिल की जाती हैं जिससे बच्चो का शारीरिक व मानसिक विकास हो तथा वे रुचिपूर्वक इसमें भाग ले सकें | 53

4.2.14 बच्चो के मूल्यांकन के लिए अपनाई जाने वाली विधियों का विवरण- 53

4.2.15 विद्यालय में शिक्षण भाषा के माध्यम का विवरण- 54

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सुझाव देने के प्रक्रम में शिक्षको ने निम्नलिखित सुझाव दिए- 54

4.3 प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई) कार्यक्रम प्रश्नावली (प्रशासकों के लिए) 55

4.3.1 *बच्चो के घर से विद्यालय के मध्य औसत दुरी का विवरण* 55

4.3.2 विद्यालय सुरक्षा तथा सामग्री माप का विवरण- 55

4.3.3 कक्षा का आकार तथा छात्रो की संख्या का विवरण- 55

4.3.4 *बच्चो को विद्यालय में दी जाने वाली सुविधाओं का विवरण-* 55

4.3.5 समुचित प्रसाधन सुविधा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में प्रदान की गयी है 56

4.3.6 विद्यालय में मध्यान भोजन की कोई व्यवस्था नही है,न ही बच्चो के सोने की व्यवस्था है,इसी कारण विद्यालय में कोई किचन की व्यवस्था भी नही है| 56

4.3.7 विद्यालय में बच्चो के लिए कार्य कार्य करने का समुचित स्थान, स्टोर रूम, वरामदा, किचन, फर्स्ट एड बॉक्स, नियमित मेडिकल चेकअप की सुविधा प्रदान की गयी हैं | 56

4.3.8 मांसपेसिय विकास के लिए विद्यालय में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण- 57

4.3.9 *सोचने सम्बन्धी क्षमता के विकास के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री का विवरण-* 57

4.3.10 विद्यालय में शिक्षकों और सहायकों की संख्या- 57

4.3.11 विद्यालय में शिक्षको की नियुक्ति की न्यूनतम योग्यता- 58

4.3.12 कक्षा में बच्चों तथा शिक्षको की संख्या का अनुपात 58

4.3.13 विद्यालय में बच्चो के प्रवेश के लिए निर्धारित न्यूनतम आयु- 58

4.3.14 बच्चो के कार्यो का रिकॉर्ड रखने की विधियों का विवरण- 58

4.3.15 ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक में निम्न लिखित योग्यताएं होनी चाहिए| 58

5 सार, निष्कर्स तथा सुझाव 61

5.1 प्रस्तावना :- 61

5.2 समस्या कथन :- 61

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :- 61

5.4 अध्ययन विधि :- 62

5.4.1 न्यादर्श - प्रस्तुत अध्ययन के लिए चुने हुए न्यादर्श में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (भोपाल) में संचालित पूर्व प्राथमिक विद्यालय को शामिल किया गया है | 62

5.4.2 उपकरण - प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित टी उपकरणों का निर्माण किया गया है - 62

5.4.3 अध्ययन विधि - प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णात्मक सर्वेक्षण है | जिसमे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (भोपाल) में संचालित प्रारम्भिक बाल शिक्षा विद्यालय के वर्तमान

परिद्रश्य को जानने का प्रयास किया गया है | 62

5.5 प्रदत्त संकलन :- 62

5.6 प्रमुख निष्कर्ष :- 63

5.7 सुझाव :- 64

5.8 भावी अध्ययन हेतु सुझाव :- 64

परिशिष्ट

परिशिष्ट - १

परिशिष्ट - २

परिशिष्ट - ३